Impact Factor – 3.452 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2018

SPECIAL ISSUE-XLIII

Translation Studies

Guest Editor
Dr. Dilip Dhondge
Principal,
MVPS's K.A.A.N.M. Sonawane College,
Satana, Tal. Baglan, Dist. Nashik.

Chief Editor :
Dr. Dhanraj T. Dhangar
Dept. of Marathi,
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist. Nashik (MS) India.

Executive Editor : Mr. S. P. Kamble, Mr. S. J. Gangurde, Mr. V. B. Rathod
MVPS's K.A.A.N.M. Sonawane College, Satana, Tal. Baglan, Dist. Nashik.

This Journal is indexed in :
- UGC Approved Journal List No. 40705 & 44117
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

RESEARCH JOURNEY

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Impact Factor – 3.452 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2018

SPECIAL ISSUE-XLIII

Translation Studies

Editorial Board of This Issue

Guest Editor

Dr. Dilip Dhondge
Principal
MVPS's K.A.A.N.M. Sonawane College,
Satana Tal. Baglan, Dist. Nashik.

Executive Editors

Mr. S. P. Kamble
Mr. S. J. Gangurde
Mr. V. B. Rathod

Chief Editor

Dr. Dhanraj Dhangar

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 350/-

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) – 3.009, (GIF) –0.676 (2013)
Special Issue 43 : Translation Studies
UGC Approved No. 40705 & 44117
ISSN : 2348-7143
February 2018

Index

Sr. No.	Title of the paper	Authors' Name	Page No.
	मराठी विभाग		
1	भाषांतरीत कादंबरी वाङ्मयाची वाटचाल	– डॉ. दत्तात्रय फलके	07
2	अनुवाद अर्थात भाषांतर : संज्ञा, संकल्पना व स्वरूप	- डॉ. अरुण पाटील	11
3	भाषांतर आणि साहित्य : अनुवादित स्त्रीवादी आणि स्त्री विषयक कादंबऱ्यांच्या संदर्भात...	- सायली योगेश आचार्य	14
4	अनुवाद : भक्तिकाल व काव्य	– प्रा. राजेश झनकर व डॉ. दीपा कुचेकर	21
5	अनुवादित साहित्याचे प्रयोजन	– डॉ. मनीषा सोनवणे	27
6	भाषांतर : एक कला	- डॉ. शोभा डहाळे	31
7	भाषांतर अभ्यासाची संकल्पना आणि सिद्धांत	– प्रा. बाळासाहेब अंभोरे	33
8	बोलीभाषेतील साहित्याचे भाषांतर : काळाची गरज	– प्रा. व्ही. बी. राठोड	36
9	भाषांतर : एक अनिवार्य ठरलेली भाषिक प्रक्रिया	- प्रा. संगीता अहिरे	43
	हिंदी विभाग		
10	अनुवाद और तकनीकी भाषा	– डॉ. व्ही.डी. सूर्यवंशी	47
11	अनुवाद और तकनीकी भाषा	– प्रा. विष्णू जी. राठोड	50
12	मराठी में हिंदी अनुवाद कि समस्याएँ	– प्रा. नयन भादुले – राजमाने	53
13	साहित्य तथा साहित्येतर अनुवाद कि समस्याएँ	– प्रा. अनिता चौधरी	58
14	अनुवाद और वैश्विकरण	– डॉ. कुसुमलता उईके	63
15	अनुवाद और संस्कृति	– प्रा. नितीन पंडित	65
16	अनुवाद के भेद एवं महत्त्व	– पोपट बिरारी	69
17	सूचना एवं दूर संचार में अनुवाद	– निलेश एस. पाटील	73
18	अनुवाद कि शैलियाँ	– प्रा. रघुनाथ मोरे	75
19	अनुवाद कि परिभाषा : स्वरूप एवं विकास	– प्रा. वाय. एस. गातवे	80
20	अनुवाद एक श्रेष्ठ प्रणाली	– प्रा. आर. डी. नाडेकर	82
21	अनुवाद और भूमंडलीकरण	– शिवशंकर ईश्वरकट्टी	86
22	अनुवाद और मीडिया	– डॉ. जी. एस. पांडव	89
23	'अनुवाद में संवाद' – देश देश कि कविताएँ	- डॉ. योगेश दाणे	92
24	अनुवाद और संस्कृति	– डॉ. शंकर शिवशेट्टे	95

"RESEARCH JOURNEY" International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 3.009, (GIF) -0.676 (2013)
Special Issue 43 : Translation Studies
UGC Approved No. 40705 & 44117
ISSN : 2348-7143
February 2018

अनुवाद और तकनीकी भाषा

डॉ. वी. डी. सूर्यवंशी
हिंदी विभागाध्यक्ष,
कर्मवीर भाऊसाहेब हिरे कला महाविद्यालय, निमगांव,
तह. मालेगांव, जिला नासिक
(महाराष्ट्र) मोबाईल नं. ९८२२६०७८२६

तकनीकी अनुवाद (Technical translation) एक विशेष प्रकार का अनुवाद है जिसमें तकनीकी विषयों से सम्बन्धित दस्तावेज का अनुवाद करना होता है। इस प्रकार का अनुवाद विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली होता है। तकनीकी शिक्षा कुशल जन शक्ति का सृजन कर, औद्योगिक उत्पादन को बढ़ावा देता है। तकनीकी भाषा का प्रयोग थल सेना, नेवी, विशेष यातायात, सार्वजनिक भवनों, बंदरगाहों के निर्माण और रखरखाव के लिए किया जाता है।

हम दैनिक व्यवहार में अपने मन की बातें साधारण शब्दों से बतलाते हैं। उदाहरणार्थ हम कहते है रमा को बुखार है, विक्रम विज्ञान की पुस्तक पढ़ रहा है, अम्मा मिठाई बनाती है, चाचा चाय पीते हैं आदि। इन्हीं वाक्यों को हम तकनीकी शब्दों का प्रयोग करके भी दुहरा सकते हैं। जैसे रमा का तापमान १०१° डिग्री चल रहा है, विक्रम अकार्बनिक रसायन की पुस्तक पढ़ रहा है, अम्मा जलेबी बनाती है, आदि। यह विशेष विषय के उन विशिष्ट शब्दों को तकनीकी शब्द कहते हैं जो खास अर्थ में रूढ़ हो जाते हैं।

साधारण व्यवहार में भी बीच–बीच में तकनीकी शब्दों का उपयोग किया जाता है, परन्तु कम। तकनीकी व्यवहार में पूर्णत: तकनीकी भाषा का ही प्रयोग होता है।

उदाहरण – जब हम किसी की बीमारी के संबंध में आपस में चर्चा करते तब कम तकनीकी शब्द आते हैं। मगर जब दो डॉक्टर आपस में उसी बीमारी पर बातचीत करते हैं तब शुद्ध तकनीकी शब्दों का प्रयोग करते हैं। इसी तरह हम अदालत में जो कागजात देते हैं, उन्हें सामान्य भाषा में एक सामान्य 'अर्जी' शब्द से पुकारते हैं। मगर न्यायालय की तकनीकी भाषा में इसके विविध भेद होते हैं–

Petition –अर्जी, Affidavit –शपथपत्र, Suit - मुकद्दमा Objection–आक्षेप, Claim –दावा, Representation–अभ्यावेदन.

इस सामान्य विवेचन से साधारण भाषा और तकनीकी भाषा का अंतर स्पष्ट हो सकता है। तकनीकी भाषा के क्षेत्र अनेक हो सकते हैं। पाकविद्या और सिलाई जैसे सरल विषय तक तकनीकी है। परमाणु विज्ञान तथा Microbiology (सूक्ष्म–जीवाणुविज्ञान) जैसे जटिल सर्वोत्तम विज्ञान भी तकनीकी विषय हैं।

१. वैज्ञानिक भाषा (Scientific Language)
२. कारखाने की भाषा (Work-shop Language)
३. विक्रय की भाषा (Sales Language)

१. वैज्ञानिक भाषा :–

विभिन्न पेशों की बोली को भी तकनीकी भाषा कह सकते हैं, जैसे–मछुआरों भाषा, बढ़इयों की भाषा, खदान के कामगारों की भाषा आदि। तकनीकी भाषा वस्तुत: समाविष्ट तकनीकी शब्दों से कहीं व्यापक होती है। नई अर्थाभिव्यक्तियों की उद्भावना उसका विकास होता जाता है। यही संसार की भाषाओं में नए शब्दों का सबसे प्रमुख सिध्द हुआ है। तकनीकी भाषा विशिष्ट और सीमित होती है। उसका सबसे मुख्य घटक शब्दराशि है। तकनीकी भाषा की अपनी व्याकरणिक विशेषताएँ भी होती हैं।

तकनीकी भाषा की संकल्पना एक खास शैली के रूप में की जा सकती है। एक ही तकनीकी भाषा के भीतर भिन्न–भिन्न शैलियाँ हो सकती हैं। वैज्ञानिक भाषा औपचारिकता का तत्त्व अधिक रहता है। इसकी अपेक्षा, कारखाने की भाषा में अनौपचारि का तत्त्व अधिक मिलता है।

वैज्ञानिक भाषा वैज्ञानिक सिध्दांतों की व्याख्या के प्रसंग पर प्रयोग की जाती इसकी शैली सामान्यत: अतिशय औपचारिक रहती है। शब्दावली अतिशय मानकीकृत होती इस विधा के अंतर्गत भी कई स्तर हो सकते है। वैज्ञानिक शब्द–संग्रह में सूक्ष्म व्याख्या अनुशासित शब्द होते हैं। ऐसे शब्द भी होते हैं जो दैनिक व्यवहार के क्षेत्र में नहीं उ वैज्ञानिक भाषा रागात्मक परिभाषा को बचाती है तथा अर्थ की स्पष्टता पर जोर देती वैज्ञानिक अंग्रेजी, लैटिन और ग्रीक से उत्पन्न उपसर्गों, प्रत्ययों एवं शब्दों का उपयोग क करती है। इसलिए वैज्ञानिक अंग्रेजी का शब्द–प्रयोग सामान्य व्यवहार की अंग्रेजी शब्द–प्रयोगों से भिन्न अनुभव हो सकता है। मगर यह उपाय विज्ञान के शब्द–संग्रह अंतर्राष्ट्रीयता लाने में सहायक सिध्द हुआ है। प्राय: लोगों की धारणा है कि वैज्ञानिक भाषा विदेशी भाषण–तत्व भरे रहते है। मगर सच तो यह है कि अधिकांश वैज्ञानिक मातृभाषा में ही जन्म लेते हैं।

वैज्ञानिक भाषा की विशेषताएँ :–

१. जहाँ साधारण भाषा व्यापक रहती हैं वहाँ वैज्ञानिक भाषा विशेष क्षेत्र पर केंद्रित करती है। सामान्यत: भाषा सहज रूप से सजीव उन्मुख रहती है। मगर विज्ञान नियंत्रित भाषा की पारिभाषिक शब्दावली उसे वर्णहीनता और स्वादहीनता की तरफ जाती है।

२. पारिभाषिक शब्दावली और प्रयोग के मानकीकरण के लिए न्यूनतम शब्दों के प्रयोग आग्रह किया जाता है।

३. वैज्ञानिक भाषा सामान्य भाषा के सहज विभिन्न प्रसंगो को बचाने का प्रयत्न करती उसमें पारिभाषिक शब्दों की सूक्ष्मतम व्याख्या करने का प्रयास होता है।

२.कारखाने की भाषा :–

कारखाने की भाषा वैज्ञानिक भाषा और सामान्य भाषा के बीच की है। उसकी साधारण भाषा से अधिक घनिष्ठता रखती है। वैज्ञानिक प्रोक्ति में औपचारिकता और अमूर्तता प्रवृत्ति है, तो कारखाने की भाषा और विक्रय की भाषा में – खासकर विक्रय की भाषा में

बोलचाल का और कभी–कभी जातीयता का वातावरण अनुभव होता है। वैज्ञानिक विचार–विनिमय में सूक्ष्म तथा निस्संग व्याख्या मिलती है। कारखाने की भाषा में स्वत: स्फूर्त (Spontaneous) प्रयोग और अलंकार होते हैं। अलंकार का प्रयोग वैज्ञानिक भाषा में भी किया जाता है। यह संकल्पनाओं के रूपायन में सहायता देता है। परंतु, कारखाने की भाषा में अलंकार अधिक स्पष्ट है।

३.विक्रय की भाषा :–

विक्रय की भाषा का ध्येय पाठक को कोई खास चीज़ खरीदने या कोई खास सेवा प्राप्त करने की प्रेरणा देना है। कभी हमारा ग्राहक तकनीकी विशेषज्ञ हो सकता है। कभी तो तकनीकी जानकारी रखनेवाले प्रशासक, प्रबंधक या अधिकारी होते है। उनकी समझ में वैज्ञानिक भाषा नहीं आती। वैज्ञानिक शब्द केवल सूचना देने के लिए प्रयुक्त नहीं होते। वे श्रोता को प्रभावित करने के लिए भी प्रयुक्त होते हैं। विक्रय भाषा वैज्ञानिक भाषा और कारखाने की भाषा की अपेक्षा कहीं अधिक व्यक्तिनिष्ठ रहती है। इसलिए उसके शब्द अधिक रंगीन होते है। कई शब्द क्षणजीवी होते हैं और अपनी सेवा देकर अदृश्य हो जाते हैं।

जो भी हो, विक्रय की भाषा के बहुत सारे शब्द सामान्य भाषा में बल्कि तकनीकी भाषा में भी शामिल हो चुके है। कुछ प्रसंगो पर जानबूझकर चिरस्थायी शब्द गढ़ने का प्रयास किया जाता है। उदा. Nylon और Celluloid स्थायी बने, लेकिन Kodak सामान्य कैमरे के अर्थ में प्रचलित नहीं हुआ। विक्रय भाषा का वाक्य–गठन महत्त्वपूर्ण होता है। वह क्रियापदों के बिना भी अपने शब्दों का गठन कर लेती हैं। विक्रय की भाषा बड़ी मात्रा तक छाया–चित्रों तथा आरेख–चित्रों की भी सहायता लेती हैं। (Drawings, Photographs, Diagrams etc.) वह भाषा बड़ी नाटकीय भी रहती है। जब वह तकनीकी प्रशिक्षण पाए हुए लोगों के वास्ते लिखी जाती है तब उसमें रागात्मक तत्त्व का महत्व कम रहता है। फिर भी विज्ञापन के चतुर साधारण ग्राहकों के विषय में अत्यंत लाभकारी सिध्द होते है।

विक्रय की भाषा सूचना देनेवाले तकनीकी लेखक की परिमार्जित शैली से ज्यों–ज्यों दूर होती हैं त्यों–त्यों अनुवाद–कार्य कठिन से कठिनतर होता है। व्यक्तिगत संप्रेषण के हित में मुहावरा और अलंकार का उन्मुक्त प्रयोग करने पर उसमें राजनीतिक रंग अधिक चढ़ जाता है।

तकनीकी शैली, साहित्यिक शैली से बिलकुल विपरीत है। उसका लक्ष्य व्यक्ति को यथासंभव कम महत्त्व देकर औसत, अतिसामान्य और व्यक्तित्वहीन शैली का सृजन करना है।

यह स्मरण करना चाहिए कि तकनीकी शैलियों में भी अच्छी और बुरी शैली होती हैं। तकनीकी शैली की सफलता, लक्ष्योचित होने में है।